B.A. Part - 1

Paper - III

## भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं :

पुनर्जन्म में विश्वास : चार्वाक दर्शन को छोड़कर सभी भारतीय दर्शन सम्प्रदाय पुनर्जन्म में विश्वास करतें हैं। ऐसा इसलिए है कि सभी दर्शन एक शाश्वत चेतन तत्व जीवात्मा में विश्वास करतें हैं यह जीवात्मा ही नित्य, कूटस्थ, शाश्वत, अमर तत्व है। पुनर्जन्म का अर्थ है: बार बार जन्म लेना। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक जीवात्मा मोक्ष की प्राप्ति नहीं कर लेता। अथवा उस परब्रह्म परमात्मा में विलिन नहीं हो जाता।

पुनर्जन्म की अवधारणात्मक आवश्यकता भी है। यदि जीवात्मा एक नित्य अपरिवर्तनशील सत्ता न हो तो और बार-बार जन्म ग्रहण न करे तो एक समस्या यह आएगी कि कर्म नियम की निरंतरता समाप्त हो जायेगी। क्योंकि यह देखा जाता है कि व्यक्ति इस जन्म में जो भी कर्म यथा जो भी पाप पुण्य कर्म करता है अगला जन्म उसी कर्म फल का परिणाम होता है।

Scanned By KagazScanner

इतना ही नहीं यह वर्तमान जन्म हमारे पिछले जन्म में किए गए कर्मों का परिणाम होता है इस लिए कर्मफल की निरंतरता के लिए के लिए भी पुनर्जन्म आवश्यक है। ऐसा नहीं होने पर कर्मफल किसी दूसरे प्राणी जिसने कर्म किया ही न हो या कर्मफल अप्राप्ति का दोष लगेगा। दर्शन शास्त्र में अथवा धर्म शास्त्रों में मृत्यु अर्थ शरीर का अन्त अथवा नाश आत्मा का नाश अथवा अन्त नहीं।

वैदिक काल में ऋषियों की यह धारणा थी कि जो व्यक्ति अपना कर्म पूर्ण ज्ञान के साथ सम्पादित नहीं करता वह पुनः पुनः जन्म लेता है। उनके अनुसार मूर्च्छा की अवस्था में मनुष्य की आत्मा शरीर का साथ छोड़ देती है इस विचार के द्वारा वे मानने लगे मृत्यु के पश्चात आत्मा दूसरी शरीर धारण करता है इस प्रकार पुनर्जन्म की अवधारणा का विकास हुआ। पुनर्जन्म की अवधारणा न केवल वैदिक व दर्शन में स्वीकार किया गया बल्कि अवैदिक दर्शन में भी इसे स्वीकार किया गया है।

Ram Narain Mishra
Assistant Prof.
S.B. College, Ara

Scanned By KagazScanner

भारतीय दर्शन की विशेषताएं –

05. व्यवहारिक पक्ष पर बल : भारतीय दर्शन का प्रधान विशेषता दर्शन के व्यवहारिक पक्ष पर बल देना है। भारत में दर्शन का जीवन से गहरा सम्बन्ध है। यहां दर्शन का उद्देश्य मानसिक कुतूहल शांत करना नहीं है बल्कि जीवन की समस्याओं को सुलझाना है। इस प्रकार भारत मे दर्शन को जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। जीवन से अलग दर्शन की कल्पना भी संभव नहीं है। प्रो॰ हिरियन्ना के शब्दों में "भारत में दर्शन जीवन के लिए है। दर्शन को जीवन का अंग बनने के कारण यह है कि यहां दर्शन का विकास विश्व के दुखों को दूर करने के उद्देश्य से हुआ है।

6. अज्ञान बन्धन का मूल कारण :– चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दार्शनिक अज्ञान को बन्धन का मूल कारण मानते हैं। अज्ञान के पराजित होकर ही मनुष्य सांसारिक दुखों को झेलता है।

Scanned By KagazScanner

अज्ञान के वशीभूत होकर ही मनुष्य सांसारिक दुखों को झेलता है।

यद्यपि अज्ञान को सभी दर्शनों में बन्धन का कारण ठहराया गया है फिर भी प्रत्येक दर्शन में अज्ञान की व्याख्या भिन्न भिन्न ढंग से की गई है। बुद्ध दर्शन में अज्ञान का अर्थ बुद्ध के चार आर्य सत्यों का ज्ञान न होना, सांख्य एवं योग में अज्ञान का अर्थ अविवेक है। शंकर के दर्शन में अज्ञान का अर्थ आत्मा के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान न होना है।

—o—

Ram Narain Mishra
Dept. of Philosophy
S.B. College, Ara

Scanned By KagazScanner